OM 14 FINAL-c_Page 1 and 2 02-10-2014 18:20 Page 12

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

सारे संसार में प्राकृतिक आपदायें बढ़ती जा रही हैं। जब कभी हम इस प्रकार की घटना सुनते हैं तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने पीड़ित भाई-बहनों को शांति व शक्ति की सकाश दें। हमारी सकाश उनके लिए सम्बल बन जायेगी। स्थूल सहयोग तो सभी कर सकते हैं लेकिन यह सहयोग सिवाए हम ब्राह्मणों के कोई और नहीं कर सकता है।

योगाभ्यास- प्रकृति के पाँचों तत्वों को पवित्र वायब्रेशन्स दें... कभी सागर के ऊपर जाकर, तो कभी आकाश में स्थित होकर, हम प्रकृतिपतियों से पवित्र वायब्रेशन्स पाकर धरा पुनः सतोप्रधान हो जाएगी...। दिन में अनेक बार अपने देह रूपी प्रकृति से न्यारा होने का अभ्यास करें।

धारणा- मैं-पन का त्याग- मैं-पन की समर्पणता से योग सहज हो जाता है। जीवन में दिव्यता आने लगती है। मन शीतल और शांत होने लगता है। सेवाओं में मैं-पन आते ही जमा का खाता कटने लगता है।

चिंतन- हमें प्रकृति का मालिक बनने के लिए क्या-क्या करना होगा? प्रकृति हलचल कर रही हो तो हमें क्या करना चाहिए? हम अपनी प्रकृति (देह) के मालिक कैसे बनें? कहीं अब तक किसी कर्मेन्द्रिय के अधीन तो नहीं हैं?

ध्यान दें- प्यारे बापदादा की पूरे सीजन की

स्वमान-मैं प्रकृति का मालिक हूँ।

दस अति सुंदर, दिव्य वरदानों और सूक्ष्मातिसूक्ष्म रहस्यों से भरी अव्यक्त मुरलियाँ हैं। तो आइये प्रति सप्ताह एक मुरली का गहन अध्ययन करें और निम्नलिखित पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखकर रविवार की क्लास में सबके साथ बाँटे-इस मुरली से धारणा के लिए आप क्या चुनेंगे? इस मुरली से योग का विशेष कौन-सा अभ्यास लेंगे? इस मुरली में प्यारे बापदादा ने कौन से विशेष इशारे दिये? इस मुरली से आपको पुरुषार्थ की कौन-सी विशेष प्रेरणा मिली और उसे प्रैक्टिकल में लाने के लिए आप क्या करेंगे? इस मुरली से आपको चिंतन की कौन-सी नई प्वाइंट मिली?

स्वमान- मैं इस धरा पर सबसे महान आत्मा हूँ।

भगवान ने जब इस धरा पर नज़र डाली तो उसकी नज़र मुझपर टिक गयी... उसने मुझे अपने कार्य के योग्य समझा... और विश्व कल्याण की ज़िम्मेदारी मुझे सौंप दी... उसने मुझे साधारण मानव से महामानव बना दिया।

योगाभ्यास- इस बार हम अपने चार अलग-अलग स्वरूपों पर स्वयं को एकाग्र करेंगे।

आत्मिक स्वरूप- भृकुटि सिंहासन पर विराजमान आत्मा पर। फरिश्ता स्वरूप- अपने सम्पूर्ण फरिश्ते स्वरूप पर। परमधाम में ज्ञानसूर्य शिवबाबा पर। अपने भविष्य दैवी स्वरूप पर।

धारणा- सम्पूर्ण समर्पणता- जब आप सम्पूर्ण समर्पित हो जायेंगे तब सम्पूर्ण बन जायेंगे। आपका हर संकल्प, बोल व कर्म ऐसा हो जो बाबा को समर्पित कर भोग लगाया जा सके।

चिंतन- समर्पणता क्या है? क्यों आवश्यकता है स्वयं को समर्पित करने की? कौन-सी बातें हमें स्वयं को अपने लक्ष्य व ईश्वर के प्रति सम्पूर्ण समर्पित नहीं होने देती? कैसे करें स्वयं को सम्पूर्ण समर्पित? कौन कर सकता है स्वयं को सम्पूर्ण समर्पित? समर्पणता के लिए बाबा के द्वारा उच्चारे पाँच महावाक्य लिखें।

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति- प्रिय आत्मन! इस बार हम एक विशेष नशे की ओर आपका ध्यान खिंचवाना चाहते हैं और वो है-भविष्य का नशा। ब्रह्मा बाबा को इस बात का कितना नशा था कि बस मैं ये पुराना शरीर छोड़ भविष्य में मिचनु श्रीकृष्ण बनूंगा। ऐसा कहकर बाबा खुशी में खग्गियाँ मारने लगते थे। हम भी बाबा की तरह दिन में कुछ समय स्वर्ग में रहने लगें और भविष्य के नशे को बढ़ायें कि मैं स्वर्णिम दुनिया में जाकर प्रिन्स बनने वाला हूँ।

उठो ... सम्पूर्णता -- पेज 5 का शेष...

असमर्थता प्रकट की।

देवता ने समझाया - हे योगी, तुम तो राजयोगी हो। यह राज्य-भाग्य तुम्हारा ही है। योगी के तो अंग-अंग शीतल व पवित्र होते हैं, तुम मुझे भूले ही रहते हो। अब मुझ अपने दिव्य स्वरूप को भी स्मृति में रखो। मैं तुम्हारा ही सत्य स्वरूप हूँ, न मेरे में हिंसा है, न कोई अपवित्रता। आओ मेरा वरण करो।

ठीक कहा देव, मैं अपने वर्तमान को ही देखकर भारी हो जाता हूँ। अब मैंने तुम्हें अपने मन में बसा लिया, अब मैं तीव्रता से आ रहा हूँ - योगी में जागृति आई। हाँ योगी - अब दिव्य संस्कारों का बाना पहनकर तेजी से मेरे पास आ जाओ - कहा देवता ने। योगी उमंग से आगे बढ़ता है। उसे लगा कि शीघ्र ही वह लक्ष्य को पा लेगा। परंतु उसे ठोकर लगी, वह गिरा। देव हँसा - सावधानी से नहीं चले, ठोकर लग गई। तुमने नहीं देखा कि मैं-पन, मान-शान के छोटे-छोटे पत्थर ज़मीन में गड़े हैं, तुम इन्हें पहचान भी नहीं पाये। योगी की मानो तीसरी आँख खुली... ओह, मैं आगे बढ़ा तो मान-शान की ठोकर लग गई। अरे भगवान् जबकि स्वयं मुझे मान दे रहा है और मैं मनुष्यों से मान पाने के लिए ठोकरें खा रहा हूँ। मेरा देव स्वरूप स्वयं मेरा स्वागत कर रहा है, मैं मनुष्यों से स्वागत चाहता हूँ। वाह, मेरा विवेक क्यों धुंधला गया। ठीक है, मैं इन सबको छोड़ता हूँ। वह पुनः उठकर साहस बटोरता है।

देव पुनः बोला - इस ताज को पहनने के लिए निष्काम भाव से विश्व-कल्याण की वृत्ति धारण करो, सबको सुख दो, सबके पालनहार बनो, तभी तो तुम्हें प्रजा विष्णु के रूप में स्वीकार करेगी। याद रखना कहीं विश्व-कल्याण करते-करते पुनः आसक्त न हो जाना।

नहीं, अब मैं सम्पूर्ण वैराग्य धारण करके शीघ्र ही आया कि आया, बस, मैं आया कि आया। योगी तेजी से आगे बढ़ता है, परन्तु पुनः उसके कदम धीमे पड़ गये। देवता मुस्कुराया - योगी ये ताज विश्व-महाराजन के लिए है, मैंने तो समझा था कि तुम इसके योग्य हो, परंतु तुममें तो अभी भय है। तुम विघ्नों से घबराते हो, तुम निंदा से डरते हो, कुछ भी सहन करने का साहस तुममें नहीं है, इस हालत में यह ताज तो तुम्हारे सिर से गिर जायेगा। योगी बोला - मैं इस ताज को अवश्य धारण करूंगा। इसके लिए ही तो मैंने आज तक अनेक कुर्बानियां दी हैं। आज से मैं हर तरह के भय को तिलांजली देता हूँ। लो, पहनाओ मुझे ये ताज। हाँ, हाँ, शाबाश! बड़े बहादुर हो तुम, परंतु उतावले न बनो, विश्व महाराजन गंभीर व धैर्यचित्त होंगे। धैर्य न खोओ योगी, ये ताज तुम्हारा ही है। आओ, देवता ने कहा। योगी धीमी गति से आगे बढ़ता है, परन्तु उसके चेहरे पर निराशा के चिन्ह अभी भी दिखाई दे रहे हैं। देवता पुनः कहने लगा - योगी, अपना चेहरा दिव्य तो बनाओ। मेरा चेहरा देखो, विश्व महाराजन से रॉयल्टी स्पष्ट झलकती है। तुमने ये कैसा रूप धरा है। योगी को एहसास हुआ, मुझे खेद है देव, सचमुच मैं अपने स्वमान हो भूल गया था। स्वमान के बिना हम सिंहासन पर कैसे सुशोभित होंगे। लो, मैं सभी हीन विचारों को त्यागकर अपने स्वमान में स्थित होता हूँ।

शाबाश योगी, तुम योग्य हो, देवता अपनी बांहें फैलाकर योगी का आह्वान करता है। परन्तु न जाने कौन सी शक्ति योगी को रोक रही है। अब उसके मन में ईश्वरीय महावाक्य गूंजने लगे - विश्व - महाराजन वही बनता है जो किसी न किसी तरह सभी का सहयोगी बनता है, जिसने दूसरों की स्थिति को महान् बनाने में सहयोग दिया हो, दूसरों की समस्याएं हल करने में सहयोग दिया हो। विश्व-महाराजन वही बनता है जो सबके दिलों पर राज्य करता हो, जो सम्पूर्ण शक्तिशाली हो। ये महावाक्य याद आते ही योगी गंभीर हो गया, मुझसे तो कई नाराज़ हैं, मैं कैसे विश्व पर राज्य करूंगा।

उसे गंभीर देख देवता बोला - क्यों गंभीर हो गये योगी, चलो, मैं ही तुम्हें एक रहस्य बता देता हूँ, उसे जल्दी धारण करके मेरे पास पहुंच जाओ। बड़ी कृपा होगी देव, योगी ने आग्रहपूर्वक कहा।

देव बोला - बहुत रॉयल बनो, अभी तुममें मांगने के संस्कार हैं। तुम बुद्धि रूपी हाथ भी फैलाते हो, दाता बनो, विशालता धारण करो स्वयं के प्रति, किसी से कुछ भी संकल्प से भी न मांगो, न स्वीकार करो।

बस समझ गया, धारण करता हूँ इस महानता को भी मैं, अब मैं योगबल से अति शक्तिशाली बनकर तुम्हारे पास आ रहा हूँ, अब मुझे कोई भी नहीं रोक सकेगा। और इस प्रकार योगी तीव्रता से आगे बढ़ता है।

उसी समय फरिश्ता भी देवता के पास प्रकट होता है। फरिश्ता और देव दोनों ही उसे आगे बढ़ता देख आनंदित हो रहे हैं। दोनों ही इशारा कर रहे हैं, चले आओ, चले आओ।

इस मिलन की खुशी में योगी को छोटे-छोटे विघ्न व छोटी-छोटी बातें खेल-सी लग रही हैं और योगयुक्त हुआ योगी दोनों के समीप पहुंच जाता है। दोनों बारी-बारी से उसका आलिंगन करते हैं। फिर दोनों, उसके मस्तक पर तिलक लगाते हैं। फरिश्ता उसके गले में माला पहनाकर देखते ही देखते उसमें समा जाता है।

अब देव उसे ताज पहनाता है। और वह भी उसमें समा जाता है।

योगी अब दिव्य स्वरूपधारी बन जाता है, जिसमें फरिश्ता व देवता दोनों दिखाई दे रहे हैं.... उसके सिर पर ताज है और पीछे प्रभामंडल।

औरंगाबाद-विहार। जिला सांसद सुशील बाबू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सविता। साथ हैं ब्र.कु. संगीता।

डिबाई। एस.डी.एम. हरिशंकर जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कुसुम। साथ हैं ब्र.कु.रचना।

नवी मुम्बई-तुर्भे। सांसद कुँवर हरिवंश सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शीला। साथ हैं ब्र.कु.मीरी, नगरसेवक संतोष शेट्टी तथा जिलाध्यक्ष रमेश त्रिपाठी।

रायबरेली-उ.प्र.। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर ब्र.कु. ज्योति द्वारा राखी बंधवाने के पश्चात् ईश्वरीय प्रसाद ग्रहण करते हुए एयर मार्शल वी.के.वर्मा। साथ हैं ब्र.कु.जाह्नवी।

वडनगर। जी.ई.बी. विभाग के एम.बी.पटेल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.ज्योत्सना व ब्र.कु.उज्जवल।

शुजालपुर सिटी। जेलर रोहिदास पिकले को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.वीणा।